ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

प्रज्ञोपनिषद् संदेश.....

ईशप्राप्तेर्भक्तिरेकमवलम्बनमस्ति हि।
उदारात्मीयभावानुप्राणिताऽदर्शवादिनी॥
सा परायणता या तु परार्था तत्र दृश्यते।
भक्तेः सा भावनासात्याययया दिव्यत्वमाप्यते॥

- प्रज्ञोपनिषद् १/५/८४-८५

अर्थात्- ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र अवलम्बन भक्ति ही है। उदार आत्मीयता से अनुप्राणित आदर्शवादी परमार्थ परायणता में ही सच्ची भक्तिभावना के दर्शन होते हैं। जो मनुष्य को दिव्य बनाती है।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक

परम पूज्य पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

अंक-२२ वर्ष- १७ | १६ मई २००५ | वार्षिक मूल्य रु. २४/- विदेश में रु. ४००/-

सच्ची सहानुभूति के विकास से ही सधती है आत्म कल्याण की साधना और लोक कल्याण की आराधना

सहानुभूति मानवता का एक विशेष और आवश्यक अंग है। जिसके हृदय में सच्ची सहानुभूति है, वह जब दूसरों को प्यार, आत्मीयता और ममता की आँखों से देखेगा, अपने कुटुम्ब की तरह दूसरों को-बाहर वालों को भी उसी सहानुभूति की दृष्टि से देखने लगेगा, तो वे भी अपने ही प्रतीत होंगे। हम अपने कुटुम्बियों के जब अनेक दोष, दुर्गुण बर्दाश्त करते हैं, उन्हें भुलाते, छिपाते और क्षमा करते हैं, तो फिर बाहर वालों के प्रति वैसा क्यों नहीं किया जा सकता? ऐसी सहानुभूति प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति ही उच्चकोटि की श्रेणी में गिना जाता है।

कृत्रिम सहानुभूति दिखाना दूसरे के प्रति एक तरह से कठोरता या निर्दयता का व्यवहार है। वस्तुतः सच्चे सहानुभावक को किसी का दुःख-दर्द पूछने की आवश्यकता नहीं होती, वरन् उसके हृदय से स्नेह का अजस्र स्रोत निकलकर चुपचाप पीड़ित को शान्ति एवं सान्त्वना देने लगता है। **हिट्मैन** ने सहानुभूति की भावात्मकता को इस तरह व्यक्त किया है-*''मुझे किसी पीड़ित मनुष्य से यह पूछने की आवश्यकता नहीं पड़ती कि वह अपने में क्या अनुभव कर रहा है या उसे कैसा लग रहा है? बल्कि मैं स्वयं उसी की भाँति पीड़ित हो उठता हूँ और उसकी वेदना को अपने अन्दर अनुभव करने लगता हूँ।''*

सच्ची सहानुभूति का प्रसार सीमित नहीं, वरन् विश्वव्यापी है। उसकी करुणा, कोमलता तथा दया का प्रवाह स्त्री-पुरुष, जड़-चेतन, राष्ट्र, धर्म, काले-गोरे, ऊँच-नीच, निर्बल-सबल में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं मानता। उदार और श्रेष्ठ आत्माएँ तो शत्रु की विपत्ति से भी विचलित न होकर सहानुभूति के साथ सहायता करने के लिए उत्सुक हो उठती हैं।

सहानुभूति, हमदर्दी अथवा प्रेम मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है। इसका विकास पाकर मनुष्य देवत्व के पद पर पहुँच सकता है। प्रेम अथवा सहानुभूति में वह शक्ति तथा ऊष्मा है, कि कठोर हृदय को भी नम्रता के साँचे में ढाल देती है। उसकी शीतल और मनोरंजक लहरें दुःखी आत्माओं में प्रसन्नता की झलक ला देती हैं। इसी सहानुभूति और संवेदना के बल पर मनुष्य दूसरों को भी अपना बना लेता है। कठोर को कोमल, निर्दयी को दयावान, बना लेना सहानुभूति सम्पन्न हृदयी व्यक्ति के लिए अधिक सरल तथा सुगम है।

कम बुद्धि रखने वाला संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के बीच उस अधिक बुद्धि रखने वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सम्मान प्राप्त कर जाता है, जो असंवेदनशील अथवा सहानुभूति से रिक्त होते हैं। उन श्रेष्ठ पुरुषों की ओर, जिनमें सहानुभूति की प्रधानता है, इस प्रकार खिंचते चले आते हैं,जैसे चन्द्रमा की किरणों की ओर समुद्र की तरंगें खिंचा करती हैं।

सहानुभूति ऐसा सरल गुण है जो हर मनुष्य को प्रकृति की ओर से सहजता से मिल जाता है। यदि एक बार इसकी कमी भी महसूस हो तो कोशिश करके विकसित भी किया जा सकता है।

यदि मनुष्य के अन्तःकरण में सहानुभूति का विचार एक बार भी जाग गया तो समझ लेना चाहिए कि आत्म कल्याण-लोक कल्याण का द्वार खुल गया। जिस व्यक्ति के अन्दर यह प्रचुर मात्रा में विद्यमान है, वही उन्नति के शिखर पर होगा। इसकी सत्यता पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध विद्वान् **बालजक** ने कहा है-*''सहानुभूति गरीबों तथा पीड़ितों की ओर खींचती है। उनकी भूख तथा पीड़ा अनुभव करती है। सहानुभूति का आर्द्रभाव अनुभावक को तद्‌रूप बना देता है। दीन-दुःखी को देखकर वह उस समय तक स्वयं भी दीन-दुःखी बना रहता है, जब तक कि उसका दुःख-दर्द दूर करने के लिए कुछ कर नहीं लेता। वह किसी की सेवा-सहायता में किया हुआ काम परमात्मा की उपासना में किया कर्त्तव्य ही मानता और अनुभव करता है। प्राणी मात्र से इस प्रकार की एकात्मता अध्यात्म योग की वह कोटि है, जो बड़े-बड़े जप तथा साधना- उपवास से ही कठिनतापूर्वक पाई जा सकती है।''*

सहानुभूति ही संसार की सबसे बड़ी विभूति है। यदि कोई किसी के प्रति सहयोग, त्याग तथा सहानुभूति न कर सभी अपनी आपा-धापी में लगे रहें, तो हर एक को अपना कुँआ खोदकर पानी पीना पड़ेगा और इस प्रकार सभी घाटे में रहेंगे।

पारिवारिक प्रगति में माता-पिता की सहानुभूति पर बच्चों की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रगति अवलम्बित है। यदि माता-पिता, बालकों के लिए कष्ट न सहें, उनकी सुख-सुविधा का ध्यान न करें, उनके पौष्टिक भोजन, इतनी महँगी शिक्षा, बीमारी में चिकित्सा, विवाह-शादी की व्यवस्था एवं उचित आजीविका आदि समस्त सुविधाओं पर ध्यान न दें तो बच्चे प्रगति नहीं कर सकते। छोटा बालक तो सर्वदा असहाय होता है। वह माता-पिता की सहानुभूति एवं सहायता के बिना जीवित भी नहीं रह सकता।

इस प्रकार पीड़ा और पतन की दुःखदायी परिस्थितियों में जकड़े प्रत्येक मनुष्य को स्नेह- सहानुभूति की आवश्यकता है। यह विभूतियाँ जिसके पास होंगी वह मात्र भाव मुद्रा प्रदर्शित करके निष्क्रिय न रह जायगा, वरन् सेवा और सहायता के लिए भी आगे बढ़ेगा। भविष्य की आशा दिलाने पर गिरे हुए व्यक्ति उठ खड़े होते हैं, इस तथ्य को जो जानता है वह निराश और विक्षुब्ध मनःस्थिति को सहनुभूति पूर्वक आशा और उत्साह के प्रकाश से आलोकित करने का निरन्तर प्रयास करता रहता है। समाज को ऐसे ही देवमानवों की आवश्यकता है। ★★

(वाङ्मय खण्ड- राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ? पृ. ४.९० से ४.९१)

३ देव संस्कृति विवि की परिवीक्षा योजना : एक क्रांतिकारी प्रयोग

७ आस्था संवर्धन और सक्रियता में निखार के विविध प्रयोग

९ देसंविवि : दूरस्थ शिक्षा केन्द्र के पत्राचार पाठ्यक्रम की प्रवेश सूचना

८ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा वर्ष २००५ की कार्ययोजना बनी

१० उत्तरांचल में कृषि विकास के लिए आयोजित हुई कार्यशाला